# समुद्र मंथन और कूर्म अवतार

बहुत समय पूर्व की बात है, देवराज इन्द्र ऋषि दुर्वासा के श्राप के कारण शक्तिहीन हो गए थे। तब विष्णु भगवान के सुझाव पर वे अपने ही शत्रु दैत्य राज बलि के पास गए मनाने के लिए कि चलिए मिलकर समुद्र मंथन करें , अमृत मिलेगा तो हम सब अमर हो जाएंगे। अमरत्व की बात सुनकर राजा बलि देवताओं संग मिलकर समुद्र मंथन करने के लिए मान गए।

मान तो गए पर मथानी और रस्सी का क्या? बहुत सोच विचार कर यह निर्णय हुआ कि मथानी बनेगा मन्दराचल पर्वत और रस्सी वासुकि नाग। पर पर्वत इतना विशाल की टिके ही नहीं। कभी इधर गिरे तो कभी उधर। तब भगवान विष्णु ने कूर्म अवतार लिया और मन्दराचल पर्वत को स्थिरता प्रदान की।

मंथन प्रारंभ हुआ और सबसे पहले निकला हलाहल कालकूट विष, जिसे भगवान शिव ने अपने कंठ में धारण किया। विष के प्रभाव से उनका कंठ नीला हो गया और तब से वे नीलकंठ कहलाए।

उसके पश्चात् अनेक प्रकार की वस्तुएं निकली जिन में से प्रमुख थी -कामधेनु गाय, कल्पवृक्ष, ऐरावत हाथी, उच्चश्रवा (सात सिर वाला घोड़ा), कौस्तुभ मणि और स्वयं माँ लक्ष्मी। अन्त में धन्वंतरि जी अमृत का कलश लेकर प्रकट हुए जिसे असुरों ने छीन लिया। तब भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण किया और बड़ी चतुराई से देवताओं को अमृत पान कराया और असुर बेसुध होने के कारण हाथ मलते ही रह गए।

**सीख :** यदि हम जीवन में सफलता रूपी अमृत प्राप्त करना चाहते है तो हमें परिश्रम रूपी मंथन करना पड़ेगा जिससे पहले तो कठिन समस्याएं रूपी विष निकलेगा पर अगर हम निरंतर प्रयास करते रहे तो हमें सफलता रूपी अमृत मिल ही जाएगा।

(उपरोक्त कथा 8 वर्षीय बालक के अनुसार, कथा वाचन प्रतियोगिता में 2 मिनट की समय अवधि में सुनाने के लिए लिखी गई है। )